आरती श्री गंगा जी की

आरती श्री गंगे भव तारिनी ।
कलिमल हरनी, सर्व सुख करनी,
मोक्षमयी त्रिताप निवारिनी।।

विष्णुपदी जय ब्रह्मसरूपा,
जै जाहनवी गंगे जलरूपा,
तीर्थ मात सुरसरी अनूपा,
जय भगीरथी, पितर उद्धारिनी
आरती श्री गंगे० -

तन सिन्दूर सिर मुकुट सुहावे,
घट्ट अरु फूल शोभा अति पावे,
देख रूप चन्दा शरमावे,
मुस्कावत हरिप्रिय आहलादिनी
आरती श्री गंगे० -

अनहद नाम धाम सुखराशी,
कलियुग मोक्ष की पूर्णमासी,
धन धन मात कहें सब वासी,
सुरनर ऋषि मुनि सब ध्यावें,
आरती श्री गंगे० -

तीन लोक तेरो यश गावें,
वेद पुराण पार नहीं पावें,
बहे भारत त्रिलोक पाविनी
जीव जन्त रक्षपाल स्वामिनी
आरती श्री गंगे० -

दर्शन ध्यान स्नान करे जो,
पूजा पाठ गुणगान करे जो,
पुण्य धर्म पिण्डदान करे जो,
दे निजधाम 'मधुप' मन-भावनी
आरती श्री गंगे

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/34353/title/aarti-shri-ganga-jee-ki

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |